Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

फ़िल्म संगीत में ग़ज़ल का सफ़र

DR. POONAM SHARMA

Associate Profesoor, (Vocal Music), Dept. of Music, Kanya Mahavidyalaya, Jalandhar

सार संक्षेपिका

प्रस्तुत प्रपत्र में सुगम संगीत की लोकप्रिय गायन शैली ग़ज़ल के फ़िल्मी सफ़र का वर्णनात्मक शोध पद्धति के अनुसार अध्ययन किया गया है। फ़िल्मों में संगीत का आगमन किस प्रकार से हुआ व् इसका शुरुआती सफ़र कैसा रहा, इस पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। भारतीय संगीत की स्वर प्रधान शैलियों तथा फ़िल्मी संगीत में प्रचलित शब्द प्रधान संगीत प्रकारों में ग़ज़ल ने अपनी संगीतात्मक तथा साहित्यक परिपक्वता के कारण शीघ्रता से ही साधारण श्रोताओं से लेकर संगीतकारों, कलाकारों तथा साहित्यकारों का ध्यान अपनी और आकर्षित कर लिया। इश्क़ हक़ीक़ी और इश्क मज़ाजी विषय पर आधारित अरबी, फ़ारसी, उर्दू, हिन्दी, पंजाबी आदि भाषाओं में रचित ग़ज़लों में शब्दों के उच्चारण और अदायगी को बहुत महत्व दिया जाता है। फ़िल्मों में बहुधा भैरवी, चारुकेशी, किरवानी, शिवरंजनी, बागेश्री, मालकौंस, चंद्रकोंस, पीलू, तिलंग, ख़माज, जोगिया आदि रागों में निबद्ध गज़लों में राग की शुद्धता से अधिक प्राथमिकता इसके शब्दों की भावात्मक अदायगी को दी गयी है। प्रस्तुत प्रपत्र में फ़िल्मों में ग़ज़ल के प्रचार-प्रसार तथा इसे लोकप्रियता के चरम शिखर पर पहुंचने वाले गायक-गायिकाओं, शायरों/कवियों, संगीतकारों तथा फ़िल्म निर्देशकों के योगदान का भी ज़िक्र किया गया है।

बीज शब्द- फ़िल्म संगीत और ग़ज़ल

भूमिका

संगीत मानव हृदय की अनुपम अनुभूति है। विभिन्न कालों में से गुज़रते, विभिन्न वर्गों में फलते-फूलते और नवीनता को अंगीकार करते हुए संगीत, सदैव से ही आनंद स्वरूप रहा। मनुष्य की अपने हृदय के विचारों को व्यक्त करने और कल्पनाशील प्रवृत्ति के कारण ही विभिन्न कलाओं का उद्गम हुआ जिन में से संगीत और नृत्य कलाओं के साथ उसका विशेष नाता रहा। "नाट्य कला मुख्य रूप से श्रव्य-दृश्य तत्वों को मूर्तिमान करने की कला है"।[1] संगीत, कविता और अभिनय के समिश्रण से सिद्ध हुई नाट्य कला ने वैज्ञानिक आविष्कारों और मानव प्रयासों के फ़लस्वरूप फ़िल्म का रूप धारण कर लिया। "फ़िल्म एक लोक तंत्रीय कला है। यह किसी एक लेखक, मूर्तिकार, चित्रकार, फोटोग्राफ़र, संगीतकार, गीतकार, गायक और कलाकार की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति नहीं है बल्कि इन सभी की कलाओं का सामूहिक योगदान है"।[2] रंगमंच की तरह ही विभिन्न दृश्य और श्रव्य कलाओं का एक अनूठा समामेलन होते हुए भी फ़िल्म एक स्वतंत्र यांत्रिक कला है जो आज के युग में समाज के लगभग हर वर्ग के लिए सबसे सुलभ माध्यम के रूप में उपलब्ध है।

फ़िल्मों में संगीत का आगमन

किसी भी युग की उपलब्धियां और संभावनाएं उस युग की कला में उभरती हैं जिसमें उस युग का समाज प्रमुख भूमिका निभाता है। समाज की छवि, विभिन्न कलाओं के माध्यम से ही विभिन्न रूपों में उभरती है। भारत में फ़िल्मों का सबसे पहला रूप ध्वनि रहित यानि मूक था। चूंकि संगीत का सम्बन्ध श्रवण अर्थात सुनने की क्रिया से है इसलिए इन मूक फ़िल्मों में संगीत का कोई स्थान नहीं था। चित्त-रंजन के प्रबल साधन संगीत के बग़ैर, बिना गीत-संगीत वाली फ़िल्मों का सफल होना कठिन था। इसलिए फ़िल्मी दुनिया में गीत-संगीत का महत्व तब से है जब से टॉकीज़ (बोलती) फ़िल्में बनने लगीं। "बोलती फ़िल्मों के निर्माण के साथ, पहला गाना 1931 में फ़िल्म आलमआरा में सुना गया था"।[3] फ़िल्मों के दृश्यों को उभारने के लिए प्रयुक्त किये गए संगीत के रूप में संगीत की एक नई विधा अस्तित्व में आई जिसने फ़िल्म संगीत या चित्रपट संगीत के रूप में दर्शकों और श्रोताओं, दोनों ही वर्गों के दिलों पर हुकूमत की। फ़िल्म संगीत में दृश्य-श्रव्य कला का मधुर मिश्रण हृदय के कोमल भावों को इस प्रकार छूता है कि दुखदायी दृश्य

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

देखकर दर्शकों की आंखों में आंसू आ जाते हैं। इस प्रकार इन दृश्यों को जीवंत करने में फ़िल्म संगीत ने अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। यहां तक कि कई फ़िल्मों की सफ़लता में उनका संगीत ही महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुआ।

फ़िल्म संगीत का विकास

शुरुआती फ़िल्मों में पारसी थिएटर का राग आधारित संगीत होता था लेकिन जैसे-जैसे फ़िल्म तकनीक विकसित हुई, संभावनाओं का अप्रतिम विस्तार हुआ और जल्द ही फ़िल्म संगीत ने अपनी स्वतंत्र शैली विकसित कर ली। "वास्तव में फ़िल्म संगीत या चित्रपट संगीत एक स्वतंत्र विधा है जिसका प्रचार फ़िल्मों के माध्यम से हुआ। फ़िल्म संगीत किसी भी सांगीतिक व्याकरण के नियमों का पाबंद नहीं है, इसलिए यह शीघ्र प्रसारित होने और दिल को छु लेने की अद्भुत क्षमता रखता है। फ़िल्मी गीतों पर किसी विशेष परम्परा का प्रभाव नहीं है। इस प्रकार फ़िल्म संगीत की परंपरा एक नया प्रयोग है जिसका आनंद हर वर्ग के लोग उठाते हैं"।[4] हमारा हिंदी फ़िल्म संगीत कथानक यानी साहित्य और दृश्य से जुड़ा हुआ है इसलिए इसमें जिस तेज़ी से बदलाव आया है, भारतीय संगीत के पूरे इतिहास में कहीं भी इतनी तेज़ी से बदलाव नहीं देखा गया है।

फ़िल्म संगीत में भारतीय संगीत शैलियों का स्थान

फ़िल्म संगीत में जिस सूझबूझ से भारतीय संगीत की ख़्याल, ठुमरी, टप्पा, दादरा, गीत, ग़ज़ल और लोकगीत आदि शैलियों का उपयोग किया गया है उससे न केवल आम लोगों की फ़िल्म संगीत के प्रति रुचि पैदा हुई है बल्कि वे भारतीय संगीत की विभिन्न विधाओं से भी परिचित हुए। विषय की प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध पत्र फ़िल्म संगीत में ग़ज़ल का सफ़र विषय पर केन्द्रित है।

ग़ज़ल की उत्पत्ति और विकास

"ग़ज़ल एक फ़ारसी शब्द है जिसका अर्थ है स्त्री से बात करना, स्त्री के सौंदर्य एवं गुणों की प्रशंसा करना"।[5] फ़ारसी लोक कथाओं से उत्पन्न ग़ज़ल के भारत में प्रचार-प्रसार का श्रेय 13वीं ई. के प्रसिद्ध सूफ़ी संत ख़्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती को जाता है जिसमें उनके शिष्य अमीर ख़ुसरो की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। एक समय मुग़ल नवाबों और शहंशाहों के दरबारों की शोभा रही ग़ज़ल की महफिलें आम दर्शकों की पहुंच से दूर, बादशाहों, रसूख़दारों और रईसों के महलों में ही सजा करती थीं जबकि अख़बारों, पत्र - पत्रिकाओं और मुशायरों ने ग़ज़ल को आम श्रोताओं और साहित्य प्रेमियों तक पहुंचाने में विशेष रूप से सहयोग दिया। इस प्रकार जल्द ही ग़ज़ल ने रिकॉर्ड, कैसेट, रेडियो और टेलीविज़न जैसे संचार साधनों के माध्यम समकालीन प्रचलित संगीत प्रकारों में अपना विशेष स्थान बना लिया और संगीत तथा साहित्य से जुड़ा एक विशेष बुद्धिजीवी वर्ग इस स्वतंत्र काव्य शैली का प्रशंसक बन गया। अरबी, फ़ारसी, उर्दू, हिन्दी, पंजाबी आदि भाषाओं में रचित ग़ज़लों का विषय अधिकतर इश्क़ हक़ीक़ी और इश्क मज़ाजी ही रहा जिसमें शब्दों के उच्चारण और अदायगी का बड़ा महत्व होता है। साहित्यिक परिपक्वता के साथ-साथ संगीतमय परिपक्वता के गुणों से सुसज्जित ग़ज़ल मुख्य रूप से पीलू, भैरवी, बागेश्री, मालकौंस, चंद्रकोंस, चारुकेशी, किरवानी, शिवरंजनी, तिलंग, ख़माज, जोगिया आदि रागों में सुनाई देती है जिनमें राग की शुद्धता से अधिक प्राथमिकता इसके शब्दों की भावात्मक अदायगी को दी जाती है।

फ़िल्मों में ग़ज़ल का सफ़र

फ़िल्मों के आरंभिक दौर में भारतीय समाज में अभिनय को खुले मन से स्वीकार नहीं किया गया था। यहां तक कि जो कलाकार इस क्षेत्र में अपना भविष्य बनाना चाहते थे, उन्हें भी काफ़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। कलाकारों और प्रौद्योगिकी के विकास की कमी के कारण शुरुआती फ़िल्म युग में वही कलाकार फ़िल्मों में आये जो अभिनय के साथ साथ संगीत तथा साहित्य का भी अच्छा ज्ञान रखते थे। क्योंकि इन में से ज़्यादातर कलाकार, शास्त्रीय संगीत व् उच्च स्तरीय काव्य से जुड़े हुए थे इसलिए शुरुआती

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

फ़िल्म संगीत पर शास्त्रीय संगीत व् पुष्ट साहित्य का प्रभाव नज़र आता है। उस समय प्रचलित फ़िल्म संगीत के बावजूद एक और शैली जिसने मंत्रमुग्ध करने वाले अंदाज़ के साथ दर्शकों और श्रोताओं के दिलों में अपनी जगह बनाई, वह थी ग़ज़ल।

फ़िल्म संगीत में ग़ज़ल गायकी का आगमन 70-75 साल पहले हुआ और धीरे-धीरे अपनी जड़ें मजबूत करते हुए इस गायकी ने अपने आप को गरिमा के साथ स्थापित कर लिया । फ़िल्मों में प्रयुक्त ग़ज़लों का विषय भी साधारण ग़ज़लों की भांति ज़्यादातार नायक - नायिका के प्रणय संबंधों से ही जुड़ा था। मूर्धन्य संगीतकारों ने फ़िल्म संगीत को एक से बढ़कर एक ग़ज़लें दीं जिससे धीरे-धीरे फ़िल्मों में ग़ज़लों का प्रयोग बढ़ने लगा और ग़ज़ल गायकों के रूप में कलाकारों का एक वर्ग अपनी पहचान बनाने लगा। अख़्तरी बाई फ़ैज़ाबादी और कुंदन लाल सहगल जैसे कुछ प्रसिद्ध ग़ज़ल गायकों द्वारा गाई हुई ग़ज़लें लोकप्रियता की पराकाष्ठा को छूते हुए श्रोताओं के होठों पर ही नहीं बल्कि ज़ेहन में भी अंकित हो गयीं। "प्रसिद्ध ग़ज़ल गायिका बेगम अख़्तर या अख़्तरी बाई फ़ैज़ाबादी की 'ग़ज़ल दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे', आग़ा फ़ैज़ की 'जो दिल में खो चुका है, वो दिल में ढूंढता है' और कुंदन लाल सहगल द्वारा गायी मिर्ज़ा ग़ालिब की ग़ज़ल 'दुनिया में हूं, दुनिया का तलबगार नहीं हूं' ने श्रोताओं और दर्शकों के दिलों में तहलका मचा दिया"।[6] 1935 की फ़िल्म देवदास, फ़िल्मी गायकी के क्षेत्र में एक क्रांति थी। इस फ़िल्म में कुंदन लाल सहगल की आवाज़ में गाई गई गज़लें लोगों की जुबान पर चढ़ गईं। यह फ़िल्मों में ग़ज़ल के स्वर्ण युग की शुरुआत थी जिसमें कई महिला गायिकाओं जैसे ज़ोहरा बाई, नूरजहाँ, सुरैया, शमशाद बेग़म आदि ने भी अपना नाम बनाया।

"1936 में, सोहराब मोदी ने फ़िल्म पुकार बनाई। इस फ़िल्म की ग़ज़ल 'ज़िंदगी का साज़ भी किया साज़ है' और 'तुम बिन हमरी कौन खबर ले गोबर्धन गिरधारी' बहुत लोकप्रिय हुए"।[7]1944 में तलत महमूद के आने से फ़िल्मी ग़ज़ल को एक नई और प्रभावशाली आवाज़ हासिल हुई। उनकी आवाज़ में मौजूद विशेष प्रकार की रूहानियत ग़ज़ल की प्रस्तुति में आकर्षण उत्पन्न करती थी। "फ़िल्म ज़ीनत (1945) में नूरजहां की मुख्य भूमिका के अलावा उनकी आवाज़ का ऐसा जादू था कि इस फ़िल्म के गाने आज भी कानों में गूंजते हैं। जे. नक्शव की लिखी ग़ज़ल 'आहें ना भरी शिकवे ना किए' को बतौर क़व्वाली, आज भी बड़े चाव से सुना जाता है"।[8] फ़िल्मों में ग़ज़लों का जो दौर आज़ादी के बाद शुरू हुआ उसमें हल्का-फुल्का गायन नहीं था। यह ग़ज़ल संगीत की दृष्टि से बहुत विकसित ग़ज़ल थी। शुरुआती फ़िल्म युग के अधिकांश गीतकार उर्दू शायरी के थे जिन्होंने फ़िल्म संगीत में ग़ज़लों का व्यापक उपयोग किया जबकि हिंदी गीतकारों ने भी कुछ बेहतरीन ग़ज़ल रचनाएँ प्रस्तुत कीं। अमीर ख़ुसरो, मिर्ज़ा ग़ालिब, इकबाल, जिगर, दाग़ , शकील, फ़िराक, फ़ैज़, मीर तकी मीर, शमीम, फ़याज़ और सुदर्शन फ़ाकिर आदि ने ग़ज़ल को लोकप्रिय बनाने और उसे एक नया मुकाम दिलाने में अहम योगदान दिया। "बिमल रॉय की बंदिनी 1963 में रिलीज़ हुई थी। ... नौशाद के संगीत सजी मेरे महबूब फ़िल्म अपने गीतों और ग़ज़लों के लिए बहुत भी लोकप्रिय हुई"।[9]

हिंदी फ़िल्म संगीत में ग़ज़ल का स्थान और लोकप्रियता

मंत्रमुग्ध कर देने वाली आवाज़ों और लुभावने संगीत संयोजनों के दम पर ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ों से सजी ग़ज़ल दिन-ब-दिन विकसित होती चली गई। आर. सी. बोराल, पंकज मलिक, अनिल विश्वास, खेमचंद्र, नौशाद, ग़ुलाम मोहम्मद, ख़्याम, मदन मोहन और शंकर जय किशन आदि जैसे संगीतकारों का फ़िल्मों के माध्यम से ग़ज़ल गायन को प्रतिष्ठित करने में विशेष योगदान रहा। इन सभी संगीतकारों ने फ़िल्मी संगीत को अविस्मरणीय ग़ज़लों का अमूल्य ख़ज़ाना दिया। फ़िल्मी ग़ज़लों में शास्त्रीय संगीत के प्रचुर प्रयोग के बावजूद भी इन माहिर संगीत निर्देशकों ने इस गायन को जनता के बीच लोकप्रिय बना दिया। फ़िल्म संगीत के क्षेत्र में ग़ज़ल के बादशाह कहे जाने वाले संगीतकार मदन मोहन द्वारा अपनी रचनाओं में प्रयोग किए गए सुन्दर संगीत संयोजन अपने आप में एक मिसाल है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

भारतीय फ़िल्म संगीत के अनमोल रत्न - सुरैया, पद्मश्री लता मंगेशकर, मोहम्मद रफ़ी, तलत महमूद, मन्ना डे, आशा भौंसले, भूपेन हजारिका, मन्ना डे, हेमंत कुमार, मुकेश, मास्टर मदन तथा भारतीय फ़िल्म संगीत के कई अन्य उच्च क्षमता वाले गायकों ने फ़िल्मों में ग़ज़ल को नए मुक़ाम प्रदान किये। ततपश्चात कई ग़ज़ल गायकों और गायिकाओं ने गायन के रिकॉर्ड (एल. पी.) बनाने के साथ-साथ फ़िल्मों में भी बहुत नाम कमाया जिनमें सुंदरा बाई, पंकज उधास, भूपेंद्र-मिताली, तलत अज़ीज़, राजकुमार रिज़वी, राजिंदर मेहता, नीना मेहता, पीनाज़ मसानी, मधु रानी, सतीश बब्बर, चंदन दास, अनूप जलोटा, हरिहरन, रूप कुमार राठौर, कमल झरिया, अहमद हुसैन, मोहम्मद हुसैन और निर्मला अरुण आदि के नाम प्रमुख हैं। जगजीत सिंह ने ग़ज़ल के लोकप्रिय रूप को संगीत की जटिल तकनीक से मुक्त करके एक अनूठा और दिल को छु लेने वाला सहज तथा सरल रूप देकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान हासिल की। फ़िल्मों में उनके द्वारा गायी गाई ग़ज़लें विशेष सराहना के साथ श्रोताओं में अत्यंत लोकप्रिय हुईं। भारतीय फ़िल्मों में ग़ज़ल गायकी की लोकप्रियता में पाकिस्तान के माहिर ग़ज़ल गायक मेहदी हसन, ग़ुलाम अली, मलिका पुखराज, फ़रीदा ख़ानम और अदनान सामी की भी अहम भूमिका रही है।

भारतीय सिनेमा में अदालत, उमराव जान, डैडी, ज़ख्म आदि जैसी भी कुछ फ़िल्में आयीं जिनका संगीत ग़ज़ल प्रधान था और इन्हीं ग़ज़लों की मौजूदगी से यह फ़िल्में न केवल बॉक्स आफिस पर सुपरहिट साबित हुईं बल्कि उनका संगीत भी अमर हो गया। निम्न तालिका में अपने समय की कुछ उन लोकप्रिय ग़ज़लों की सूची दी गई है जिनके अस्तित्व ने इन फ़िल्मों की लोकप्रियता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और जन साधारण की ज़ुबान पर भी अपनी जगह बनाई।

ग़ज़ल	फ़िल्म/वर्ष	गायक/गायक	संगीतकार	रचनाकार
नुक्ता चीं है गमे दिल	यहूदी की लड़की (1933)	के. एल. सहगल	पंकज मलिक	मिर्ज़ा ग़ालिब
फ़िर फ़सले बहार आई	रोटी (1942)	अख़्त्री बाई फ़ैज़वादी	अनिल विश्वास	सफ़दर आह
बड़े बे मुरव्वत हैं ये हुस्न	बदनाम (1946)	सुरैया मुल्तानिकर	देबू भट्टाचार्य	मसरूर अनवर
ना मिलता ग़म तो	अमर (1954)	लता मंगेशकर	नौशाद अली	शील बंदुआनी
यूँ हसरतों के दाग़, उनको ये शिकायत है	अदालत (1958)	लता मंगेशकर	मदन मोहन	राजिंदर कृष्ण
लगता नहीं है दिल मेरा	लाल किला (1960)	मोहम्मद रफ़ी	एस. एन. त्रिपाठी	बहादुर शाह जफ़र
धड़कते दिल की तमन्ना हो	शमां (1961)	सुरैया	ग़ुलाम मुहम्मद	कैफ़ी आज़मी
रंग और नूर की बारात	ग़ज़ल (1964)	मोहम्मद रफ़ी	मदन मोहन	साहिर लुधियानवी
दिल चीज़ क्या है	उमराव जान (1964)	आशा भौंसले	खैयाम	शहरयार
दीवाना बनाना है तो	अनुभव (1971)	बेगम अख्तर	कन्नू राय	बेहज़ाद लखनवी
चुपके चुपके रात दिन	निकाह (1982)	गुलाम अली	गुलाम अली	हसरत मोहानी
झुकी झुकी सी नज़र	अर्थ (1982)	जगजीत सिंह	कुलदीप सिंह	कैफ़ी आज़मी
किसी नज़र को तेरा	एतबार (1985)	आशा भौंसले, भूपिंदर सिंह	भप्पी लहरी	हसन कमल
एक अकेला इस शहर में	घरौंदा (1977)	भूपिंदर सिंह	जयदेव	गुलज़ार

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

उपसंहार

पिछले कुछ समय से अधिकांश गीतकारों ने संगीत निर्देशकों के निर्देशानुसार भारतीय फ़िल्म संगीत में नए प्रयोगों के नाम पर पाश्चात्य धुनों पर आधारित गीत लिखने शुरू कर दिए हैं जिनमें न तो शब्द अपने अर्थ को सार्थक कर पाते हैं और न ही उनका लय के साथ सही तालमेल दिखाई देता है जबकि पहले के समय में श्रेष्ठ कवियों, बेहतरीन शायरों और परिष्कृत गीतकारों द्वारा लिखे गए गीतों तथा ग़ज़लों को ही संगीत से अलंकृत किया जाता था। यही कारण है कि अपनी सहजता और सरलता के कारण यह गीत तथा ग़ज़लें आज भी अपनी महक बिखेर रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारतीय कंठ तथा वाद्य संगीत गायन वादन सुमेल, डा. अरुण मिश्रा, कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली 110002 (2002) पृष्ठ - 03
2. भारतीय फ़िल्म संगीत में ताल समन्वय, डा. इंदु शर्मा सौरभ, कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली 110002 (2006) पृष्ठ - 53
3. धर्मयुद्ध (साप्ताहिक पत्रिका) कंठ किसी का होंठ किसी के, बैनेट कोलमेन एन्ड कम्पनी लि., बम्बई, सुदीप, मार्च (1987) पृष्ठ -11
4. भारतीय कंठ तथा वाद्य संगीत गायन वादन सुमेल, डा. अरुण मिश्रा, कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली 110002 (2002) पृष्ठ - 114
5. संगीत (जनवरी 1967) ग़ज़ल प्रेम की अभ्व्यक्ति का माध्यम, कु. विजय ठाकुर, पृष्ठ - 20
6. संगीत (जनवरी 1967) ग़ज़ल एक परिपूर्ण शैली, प्यारे लाल श्रीमाल पृष्ठ - 17
7. हिंदी चित्रपट का गीति साहित्य, प्रथम संस्करण, डा. ओंकार प्रसाद माहेश्वरी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा (1978) पृष्ठ -33
8. भारतीय फ़िल्म संगीत में ताल समन्वय, डा. इंदु शर्मा सौरभ, कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली 110002 (2006) पृष्ठ - 32
9. वही, पृष्ठ - 36-37